इजराइल-फिलिस्तीन के बीच मिस्र ने कराया सीजफायर : अमेरिका और यूएन ने कहा- थैक्यू; गाजा से अब भी हजारों इजराइलियों को निकाला जा रहा

जेरूसलम।

इजराइल और फिलिस्तीन के इस्लामिक जिहाद संगठन के बीच मिस्र ने सीजफायर कराया है। हफ्ते भर तक चली हिंसा में फिलिस्तीन के 33 लोगों की जान चली गई थी, जिसमें 12 आम नागरिक भी शामिल थे। इस सीजफायर को लेकर अमेरिका और यूएन ने मिस्र को धन्यवाद दिया। इजराइल के नेशनल सिक्योरिटी एडवाइजर जाकी हनेगबी ने कहा कि मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल सीसी के प्रयास अहम रहे हैं। सीजफायर में सिर्फ मिस्र नहीं बल्कि अमेरिका के अधिकारियों ने भी अहम भूमिका निभाई। वहीं, इजराइल सीजफायर के बावजूद गाजा के पास के इलाकों से इजराइलियों को निकाल रहा है। उन्हें होटल, हॉस्टल और गेस्ट हाउस में रखा जा रहा है। डिफेंस मिनिस्टर योआव गैलांट ने बताया कि ये काम एक ऑपरेशन के तहत किया जा रहा है। जिसे गस्ट ऑफ विंड नाम दिया गया है। पिछले एक हफ्ते में इस्लामिक जिहाद संगठन ने इजराइल पर हजार से ज्यादा रॉकेट दागे हैं। इसके चलते कई इजारलियों को बंकरों में पनाह लेनी पड़ी थी। मिस्र के टीवी चैनल अल-कहेरा ने जानकारी देते हुए बताया कि सीजफायर रात 10 बजे से लागू हुआ।

जब तक इजराइल हमला नहीं करेगा हम भी शांत रहेंगे - सीजफायर को लेकर फिलिस्तीन के इस्लामिक जिहाद संगठन ने कहा कि हम इस सीजफायर का पालन करने की घोषणा करते हैं। इसे तब तक मानेंगे जब तक इजराइल हमला नहीं करता है। इजराइल ने अटैक किया तो हम भी शांत नहीं रहेंगे। इजराइल की मिलिट्री ने अलजजीरा को बताया की वो सीजफायर का आंकलन कर रहे हैं। इसमें प्रधानमंत्री नेतन्याहू और डिफेंस मिनिस्टर योआव गैलांट भी शामिल होंगे। इस दौरान मिलिट्री के इंटेलिजेंस अधिकारी दोनों को सिचुएशन की पूरी जानकारी देंगे।

इजराइल की एयर रेड से शुरू हुई हिंसा - इजराइल की एयर रेड में इस्लामिक जिहाद के 3 टॉप कमांडर मारे गए थे। इसके बाद बदले की कार्रवाई में फिलिस्तीन की तरफ से लगातार रॉकेट दागे गए थे। इसमें इस्लामिक जिहाद के लड़ाकों के अलावा आम लोगों की भी जान गई थी। कई घर भी तबाह हुए थे। वहीं, इस्लामिक जिहाद के फायर किए गए रॉकेट में एक 80 साल की इजराइली महिला की भी मौत हो गई। हमले के दौरान महिला अपने विकलांग पति की मदद कर रही थी। फिलिस्तीन इस्लामिक जिहाद संगठन को 1981 में बनाया गया था। इसकी शुरुआत मिस्त्र में पढ़ने वाले फिलिस्तीनी लड़कों ने की थी।

न्यूज ब्रीफ

पूर्व राष्ट्रपति भंडारी ने भारतीय क्षेत्र कालापानी, लिपुलेख, लिम्पियाधुरा को बताया नेपाल का अभिन्न अंग

काठमांडो। कालापानी, लिपुलेख और लिंपियाधुरा नेपाल के अभिन्न अंग हैं और इसे लेकर नेपाल के

भारत के साथ सीमा विवादों को कूटनीतिक तरीके से सुलझाया जाना चाहिए। नेपाल ने नए नक्शे में इन तीनों स्थानों के अविभाज्य क्षेत्रों के रूप में शामिल किया है। यह बात नेपाल की पूर्व राष्ट्रपति बिद्या देवी भंडारी ने लेखक अच्युत गौतम और सुरेंद्र केसी की पुस्तक नेपाली टेरिटरी लिम्पियाधुरा के विमोचन पर कही। भंडारी ने इस साल मार्च में पद छोड़ दिया था। उन्होंने कहा, नेपाल के राष्ट्रीय हितों और सुरक्षा के लिए मैत्रीपूर्ण देशों से विनिमय की अपेक्षा स्वाभाविक है। नेपाल समय-समय पर इन तीनों क्षेत्रों को अपने हिमालयी क्षेत्र का हिस्सा बताकर ये मामला उठाता रहा है। इसके पहले काठमांडो में भारतीय दूतावास ने कहा था कि नेपाल के साथ सीमा मुद्दे पर भारत की स्थिति सर्वविदित, सुसंगत और स्पष्ट है। इसकी सूचना नेपाल सरकार को दे दी गई है। क्या है लिपुलेख, लिम्पियाधुरा और कालापानी विवाद नेपाल भारत की तीन दिशा पूरब, पश्चिम और दक्षिण से घिरा हुआ है। नेपाल कालापानी, लिपुलेख और लिम्पियाधुरा को अपना हिस्सा बताता है। नेपाल कहता है कि भारत ने जबरन कब्जा किया है। लिपुलेख दर्रा कालापानी के पास एक सुदूर पश्चिमी बिंदु पर स्थित है। यह नेपाल और भारत के बीच एक विवादित सीमा क्षेत्र है। भारत और नेपाल दोनों कालापानी को अपने क्षेत्र के अभिन्न अंग के रूप में दावा करते हैं। भारत उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले के हिस्से के रूप में और नेपाल धारचूला जिले के हिस्से के रूप में इस पर दावा करता है।

आतंकियों से बात कैसे कर सकते हैं, इमरान खान समर्थकों की हिंसा पर भड़के बिलावल भुट्टो

इस्लामाबाद। पीटीआई चीफ इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद उनके समर्थकों ने जो हिंसा का तांडव किया, उसे पूरी दुनिया ने देखा। अब पाकिस्तान के विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो ने कहा है कि इन राजनीतिक आतंकियों से कैसे बात की जा सकती है भुट्टो ने कहा कि हम हमेशा बातचीत करने के समर्थक रहे हैं और हम अपने सहयोगियों को भी इसके लिए राजी कर सकते हैं लेकिन इन आतंकियों के साथ कैसे बातचीत कर सकते हैं हम सिर्फ उन्हीं के साथ बातचीत कर सकते हैं जो आतंकवाद की निंदा करें और अपने आप को इन राजनीतिक आतंकियों से अलग करें। भुट्टो ने न्यायपालिका की भी आलोचना की और कहा कि देश में न्यायपालिका जरूरत से ज्यादा राजनीतिक हो गई है। एक जनसभा के दौरान पाकिस्तान पीपल्स पार्टी के नेता बिलावल भुट्टो ने कहा कि जब हम देश में लोकतंत्र लागू लाते हैं तो न्यायपालिका जरूरत से ज्यादा राजनीतिक हो जाती है। वहीं जब देश में तानाशाही रहती है तो न्यायपालिका शांत रहती है। अब एक बार फिर न्यायपालिका जरूरत से ज्यादा राजनीतिक हो रही है। बता दें कि सुप्रीम कोर्ट ने इमरान खान को उनके खिलाफ चल रहे कई मामलों में जमानत दे दी है। यही वजह है कि भुट्टो ने न्यायपालिका को निशाने पर लिया।

प्राचीन इन्सानों के दांत के बैक्टीरिया से बनेगी दवा, पुरानी बीमारियों का होगा इलाज

वाशिंगटन। बैक्टीरिया से होने वाली बीमारियों से बचाने के लिए वैज्ञानिक अब प्राचीन इन्सानों के दांतों में मिले बैक्टीरिया का इस्तेमाल करके एंटीबायोटिक दवा बनाने जा रहे हैं। इसके लिए वो प्राचीन निएंडरथल मानवों के दांत से बैक्टीरिया निकालेंगे। ये बैक्टीरिया उस समय के इन्सानों के दांत में बने गड्ढे में छिपे थे। इस एंटीबायोटिक से कई पुरानी और नई बीमारियों से इन्सानों को बचा सकता है। वैज्ञानिक निएंडरथल मानव के दांत में छिपे बैक्टीरिया की मदद से एंटीबायोटिक बनाने जा रहे हैं। साइंस जर्नल में प्रकाशित एक रिपोर्ट में कहा गया है कि ये बैक्टीरिया दांत में बने गड्ढों में छिपे हैं। सूक्ष्म जीव हमारे ओरल माइक्रोबायोम के अलग-अलग प्रकार का बड़ा हिस्सा होते हैं। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की बायोमॉलीक्यूलर आर्कियोलॉजिस्ट क्रिस्टीना वैरिनर ने कहा, आज के दौर में इन्सानों के मुंह में मिलने वाले बैक्टीरिया की प्राचीन दुनिया से एकदम अलग है। इसलिए प्राचीन बैक्टीरिया की मदद से बनने वाले एंटीबायोटिक से हम इन्सानों को कई तरह की बीमारियों से बचा सकते हैं। वैज्ञानिकों के मुताबिक, शरीर में दांत ऐसी चीज है जो लंबे समय तक ठीक स्थिति में रहती है। यहीं पर डीएनए की सबसे ज्यादा मात्रा पाई जाती है। दांत के बेहद छोटे हिस्से से भी क्रिस्टीना करोड़ों डीएनए निकाल सकती हैं। ये डीएनए अलग-अलग प्रजातियों के सूक्ष्म जीवों के हो सकते हैं।

तुर्किये में भूकंप के 3 महीने बाद चुनाव

कश्मीर पर पाकिस्तान का साथ देते रहे हैं राष्ट्रपति एर्दोगन; अब 'गांधी कमाल' सबसे बड़ी चुनौती

इस्तांबुल।

तुर्किये में राष्ट्रपति और संसदीय चुनाव हैं। 20 साल से सत्ता पर काबिज राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन के लिए ये इलेक्शन्स बेहद अहम हैं। दरअसल, 6 फरवरी को आए भूकंप में तुर्किये के 50 हजार से ज्यादा लोगों की मौत हुई थी। राष्ट्रपति एर्दोगन और उनकी पार्टी की इस बात के लिए काफी आलोचना हुई थी कि उन्होंने भूकंप के बाद मदद पहुंचाने में सुस्ती दिखाई। इसके साथ ही उनकी सरकार सालों तक कंस्ट्रक्शन की सही व्यवस्था को लागू करने में भी विफल रही। एर्दोगन हमेशा से कश्मीर मुद्दे पर पाकिस्तान का साथ देते रहे हैं। इसके बावजूद भूकंप के बाद भारत ने तुर्किये को काफी मदद पहुंचाई थी। एर्दोगन ने कई बार कहा है कि कश्मीर समस्या का समाधान यूएन के प्रस्तावों के तहत होना चाहिए। हालांकि पिछले साल एर्दोगन ने यूएन में निष्पक्ष रवैया अपनाया था। उन्होंने कहा था- 75 साल पहले भारत और पाकिस्तान आजाद हुए, लेकिन दोनों मुल्कों के बीच शांति और एकता स्थापित नहीं हो पाई। हम उम्मीद करते हैं कि जल्दी ही कश्मीर में उचित और स्थायी शांति स्थापित होगी।

तुर्किये में 6 फरवरी को आए भूकंप में कई शहर और इमारतें तबाह हो गई थीं। विश्व बैंक के मुताबिक भूकंप के चलते तुर्किए को 34 अरब डॉलर यानी करीब 2 लाख 81 हजार करोड़ का नुकसान हुआ था। इसके अलावा यहां 10 लाख से ज्यादा लोग बेघर हो गए थे।

कौन हैं राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन - रेसेप तैयप एर्दोगन जस्टिस एंड डेवलपमेंट पार्टी के नेता हैं। उनकी उम्र 69 साल है। वो दक्षिणपंथी विचारधारा के समर्थक हैं। उनकी पार्टी की राजनीति इस्लाम की तरफ झुकी है, लेकिन उन्होंने राष्ट्रवादी विचारधारा वाली नेशनलिस्ट मूवमेंट पार्टी के साथ गठबंधन किया है।

तुर्किये की सत्ता 2003 से एर्दोगन के पास है। वो 2014 तक प्रधानमंत्री रहे। फिर वो तुर्किये के पहले ऐसे राष्ट्रपति बने जिन्हें वोटिंग के जरिए चुना गया। इसके बाद उन्होंने एक रेफरेंडम में भी जीत हासिल की जिसके तहत देश की पूरी पावर राष्ट्रपति के हाथों में आ गई। एर्दोगन तुर्किये के पहले ऐसे नेता हैं जो 20 साल से सत्ता पर काबिज हैं।

एर्दोगन ने 1976 में अपने राजनीतिक करियर की शुरुआत की। देश के पूर्व प्रधानमंत्री नेमेटिन एरबाकन को उनका गुरु कहा जाता है। 1994 में एर्दोगन इस्तांबुल के मेयर के तौर पर चुने गए। 1998 में उन्होंने ईरान और अजरबैजान से जुड़ी एक विवादित कविता कही, जिसके बाद उन्हें चार महीने के लिए जेल जाना पड़ा।

1999 में वो जेल से बाहर आए और 2001 में उन्होंने जस्टिस एंड डेवलपमेंट पार्टी का गठन किया। इस दौरान उन पर पॉलिटिकल बैन भी लगा रहा। पार्टी बनाने के 15 महीनों बाद ही 2002 में एर्दोगन तुर्किये में आम चुनाव जीत गए। हालांकि अगले साल मार्च में बैन हटने के बाद ही वो प्रधानमंत्री बन पाए।

एर्दोगन को चुनौती दे रहे हैं तुर्किये के 'गांधी' - तुर्किये के 6 विपक्षी दलों ने राष्ट्रपति और संसदीय चुनावों के लिए एकजुट होकर विपक्षी नेता कमाल केलिकदारोग्लू को अपने गठबंधन का उम्मीदवार चुना है। इस गठबंधन को टेबल ऑफ सिक्स नाम दिया गया है। कमाल मुख्य विपक्षी दल रिपब्लिकन पीपुल्स पार्टी के नेता हैं। उनकी पहचान 'तुर्किये के गांधी' के तौर पर बन चुकी है। स्थानीय मीडिया उन्हें 'गांधी कमाल' कहता है। वह महात्मा गांधी की तरह ही चश्मा पहनते हैं और उन्हीं की तरह राजनीतिक शैली भी विनम्र है। कमाल 2002 में से जुड़े थे। यह देश का सबसे पुराना राजनीतिक दल है। इसकी स्थापना आधुनिक तुर्किये के संस्थापक मुस्तफा कमाल अतातुर्क ने की थी। 2010 में एक वीडियो लीक मामले के बाद बायकल ने इस्तीफा दे दिया। तब कमाल को पार्टी की कमान सौंपी गई। नागरिक अधिकार, सामाजिक न्याय और लोकतंत्र के लिए तो वे लड़ ही रहे थे, 2011 में एर्दोगन के पीएम बनने के बाद कमाल ने अभियान और तेज कर दिया। कमाल पर कई बार जानलेवा हमले भी हो चुके हैं। 2016 में उनके काफिले पर मिसाइल से और 2017 में आईएस ने बम से हमला किया था। 2019 में भी उन्हें मारने की कोशिश की गई थी।

अमेरिकी सीनेट ने गीता राव गुप्ता की नियुक्ति पर लगाई मुहर, डीयू से रहा है नाता

वाशिंगटन।

मंत्रालय ने ट्वीट किया कि वह अमेरिकी विदेश नीति के माध्यम से महिलाओं और लड़कियों के अधिकारों को बढ़ावा देने के गुप्ता के प्रयासों से काफी प्रभावित है। इस सप्ताह की शुरुआत में अमेरिकी सीनेट में हुए मतदान में 51-47 मतों से गुप्ता के नाम की पुष्टि की गई।

गुप्ता के अनुसार, दुनिया भर में ऐसी कई असमानताएं और तिरस्कार हैं, जिन्हें महिलाएं झेल रही हैं और ये उन्हें अर्थव्यवस्था में पूरी तरह भागीदार बनने से रोकती हैं। उन्होंने पिछले साल कहा था कि वे अपनी सुरक्षा से संबंधित खतरों का सामना कर रही हैं। उन्हें रोजाना हिंसा का डर भी सताता है, और इससे वे अस्थिर होती हैं। गीता गुप्ता को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लैंगिक समानता और महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा को बढ़ावा देने वाले नेता के रूप में जाना जाता है और अमेरिकी विदेश विभाग ने उनकी नियुक्ति का स्वागत किया है। विदेश विभाग ने ट्वीट किया कि अमेरिकी विदेश नीति के माध्यम से महिलाओं और लड़कियों के अधिकारों को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों के लिए तत्पर है। गुप्ता ने विभिन्न संयुक्त राष्ट्र (यूएन) एजेंसियों और कार्यक्रमों के साथ मिलकर काम किया। उन्होंने यूएन फाउंडेशन के लड़कियों और महिलाओं के लिए 3डी कार्यक्रम के कार्यकारी निदेशक के रूप में काम किया। वह महिलाओं और एड्स पर यूएनएड्स ग्लोबल गठबंधन की सलाह भी देती हैं और इंटरएक्शन और मोरिया फंड के बोर्ड में हैं। उन्होंने शिक्षा और लैंगिक समानता पर संयुक्त राष्ट्र मिलेनियम प्रोजेक्ट टास्क फोर्स के सह-अध्यक्ष का पद भी संभाला। यूएन फाउंडेशन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष पीटर येओ ने कहा कि गुप्ता की नियुक्ति ऐसे समय में लैंगिक समानता के लिए अमेरिकी प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है जब दुनिया भर में महिलाओं के बुनियादी मानवाधिकार और कल्याण खतरे में हैं। यूएन फाउंडेशन की लड़कियों और महिलाओं की रणनीति के उपाध्यक्ष मिशेल मिलफोर्ड मोर्स ने कहा कि डॉ गुप्ता वैश्विक महिला मुद्दों के कार्यालय के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में व्यापक अनुभव के साथ एक अत्यधिक प्रशंसित नेता हैं।

रूस के 4 मिलिट्री एयरक्राफ्ट्स पर अटैक: यूक्रेन बॉर्डर के पास मार गिराए गए सुखोई फाइटर जेट्स, यूक्रेन बोला- ये कर्मों का नतीजा

मॉस्को/कीव।

रूस के दो जेट्स और 2 हेलिकॉप्टर को यूक्रेन के बॉर्डर के पास मार गिराया गया है। इनमें एसयू -34 फाइटर बॉम्बर, एसयू -35 फाइटर जेट और 2 एमआई-8 हेलिकॉप्टर शामिल हैं। ये अटैक यूक्रेनी बॉर्डर से सटे ब्रांस्क क्षेत्र में हुआ। चारों एयरक्राफ्ट्स को एक साथ निशाना बनाया गया। हालांकि, यूक्रेन ने इस अटैक की जिम्मेदारी नहीं ली है। चारों एयरक्राफ्ट्स एक रेडिंग पार्टी का हिस्सा थे और यूक्रेन के चेर्निहाइव क्षेत्र में मिसाइल और बॉम्ब अटैक के लिए जा रहे थे। इस अटैक में 4 क्रू मेंबर्स की मौत हो गई। एक आपातकालीन सेवा के अधिकारी के हवाले से कहा- एक रूसी हेलिकॉप्टर के इंजन में आग लगने के कारण यह ब्रांस्क क्षेत्र में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हालांकि, इसमें अटैक या सुखोई फाइटर जेट का कोई जिक्र नहीं किया गया।

रूसी मीडिया पर अटैक का वीडियो वायरल

यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की के सीनियर

एडवाइजर मिखाइलो पोडोलिक ने कहा- रूसी मिसाइल यूक्रेन पर अटैक के लिए आ रही थी। लेकिन तभी कुछ लोगों ने उसे मार गिराया। ये कर्मों का फल है। एक और अपराध होने से पहले हत्यारे एयरक्राफ्ट मार गिराए गए। रूस के एक टेलिग्राम चैनल पर एयरक्राफ्ट को मार गिराने का वीडियो वायरल हो रहा है। इसमें आसमान में उड़ रहे एक एयरक्राफ्ट में पहले ब्लास्ट होता है और फिर आग लग जाती है। दूसरी तरफ, रूस की डिफेंस मिनिस्ट्री ने कहा कि यूक्रेनी एयरक्राफ्ट ने रूस के लुहांस्क में 2 इंडस्ट्रियल साइट्स को निशाना बनाया। यूक्रेन ने इस हमले में ब्रिटेन की लंबी दूरी वाली क्रूज मिसाइल का इस्तेमाल किया।

ब्लैक लाइव्स मैटर, जॉर्ज फ्लॉयड से जुड़े अंश मिटाए: फ्लोरिडा में नस्लीय और सामाजिक न्याय के मुद्दों से जुड़ी किताबें हटाने का आदेश

फ्लोरिडा।

अमेरिका के फ्लोरिडा में सामाजिक अध्ययन की कई पाठ्यपुस्तक रिजेक्ट कर दी गईं और कई संपादित की गई हैं। राज्य के शिक्षा विभाग ने हाल में ऐसी स्कूल बुक्स को हटाने की घोषणा की, जो नस्लीय व सामाजिक न्याय के मुद्दों से संबंधित हैं। रिपब्लिकन गवर्नर रॉन डीसांटिस ने इसके लिए जागृत स्वदेशीकरण अभियान चलाया। संशोधन के बाद प्राथमिक विद्यालय की पाठ्यपुस्तक में राष्ट्रीय गान के बारे में बात करने को लेकर अब होम सपोर्ट गाइडेंस शामिल नहीं है। इसमें सलाह शामिल थी कि माता-पिता इसे बात करने के अवसर के तौर पर इस्तेमाल कर सकते हैं कि क्यों कुछ नागरिक पुलिस की बर्बरता और नस्लवाद के विरोध के लिए घुटने टेक रहे हैं।

ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित किताबें ज्यादा जरूरी - अधिकारियों ने कहा कि ये सामग्री आयु-उपयुक्त नहीं थी। विभिन्न प्रकार की अर्थव्यवस्थाओं पर एक अध्याय संपादित किया गया, ताकि समाजवाद का विवरण अच्छा और समान रखा जा सके और अधिक समानता को बढ़ावा मिले। माध्यमिक विद्यालय की पुस्तक में अब ब्लैक लाइव्स मैटर आंदोलन, जॉर्ज फ्लॉयड की हत्या और समाज पर इसके प्रभाव पर एक अंश हटाया है। राज्य ने कहा कि इस अंश में अवांछित विषय शामिल थे। फ्लोरिडा के शिक्षा आयुक्त मैनी डियाज जूनियर ने कहा कि पाठ्यपुस्तकों को ऐतिहासिक तथ्यों पर ध्यान देना चाहिए और गलतियों या वैचारिक बयानबाजी से दूर होना चाहिए।

संपादन के बाद 101 बुक्स में से 35 बुक्स रिजेक्ट - 101 पुस्तकों में से 82 रिजेक्ट कर दी गईं। गलत सामग्री, त्रुटियों और अन्य सूचनाओं पर विचार करने के बाद राज्य ने प्रकाशकों के साथ संपादन पर काम किया, जिसके बाद 66 पाठ्यपुस्तकों को मंजूरी दे दी गई, फिर भी 35 पाठ्यपुस्तकों को रिजेक्ट कर दिया गया। 46 वर्षीय अश्वेत नागरिक जॉर्ज फ्लॉयड को 25 मई, 2020 को अमेरिका के मिनियापोलिस में एक दुकान के नकली बिल का इस्तेमाल करने के संदेह में गिरफ्तार किया गया था।

अमेरिका सिंतबर तक नष्ट कर देगा अपने केमिकल हथियार

रूस के दबाव में राष्ट्रपति बाइडेन ने की घोषणा, चीन के पास जापान के रासायनिक हथियार

वॉशिंगटन।

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने घोषणा की है कि वो सितंबर 2023 तक अपने सारे केमिकल हथियारों को नष्ट कर देंगे। दरअसल, पिछले महीने ही रूस और चीन ने एक जॉइंट स्टेटमेंट जारी कर अमेरिका पर केमिकल हथियारों को नष्ट करने का दबाव बनाया था। बयान में कहा गया था कि अमेरिका अकेला केमिकल वेपन कन्वेंशन का सदस्य है जिसने अपने रासायनिक हथियारों को खत्म नहीं किया है। व्हाइट हाउस ने कहा कि अगले हफ्ते अमेरिका और सीडब्लूसी के सदस्य एक कॉन्फ्रेंस के लिए इकट्ठा होंगे। इसमें दुनिया को केमिकल हथियारों से मुक्ति दिलाने पर चर्चा की जाएगी। हम दुनिया को उदाहरण के जरिए लीड कर रहे हैं। अमेरिका हमेशा इस तरह के खतरनाक हथियारों को इकट्ठा करने का विरोध करता रहेगा। हमें दूसरे देशों को भी सीडब्लूसी के साथ काम करने के लिए

प्रेरित करना चाहिए।

रूस ने 2017 में नष्ट किए थे अपने केमिकल वेपन - रूस का कहना है कि उसने 2017 में ही अपने सारे केमिकल हथियार नष्ट कर दिए थे। हालांकि, यूक्रेन जंग शुरू होने के बाद अमेरिका और ब्रिटेन ने आशंका जताई थी कि रूस-यूक्रेन के खिलाफ केमिकल वेपन यानी केमिकल हथियारों का इस्तेमाल कर सकता है। वहीं, रूस ने इसके पहले अमेरिका पर यूक्रेन में केमिकल और बॉयोलॉजिकल हथियार बनाने का आरोप लगाया था। चीन का कहना है कि उसने कभी भी केमिकल हथियार नहीं बनाए । हालांकि, उसके पास सेकेंड वर्ल्ड वॉर के दौरान जापान ने चीन में केमिकल हथियारों को बड़ा जखीरा छोड़ा था। जिन्हें अब नष्ट करने की बात कही जा रही है।

क्या होते हैं केमिकल हथियार - ऑर्गेनाइजेशन फॉर द प्रोहिबिशन ऑफ केमिकल वेपंस केमिकल हथियार ऐसे हथियार होते हैं, जिनमें जहरीले केमिकल का इस्तेमाल जानबूझकर लोगों को मारने या नुकसान पहुंचाने के लिए होता है। ऐसे सैन्य उपकरण जो खतरनाक केमिकल को हथियार बना सकते हैं, उन्हें भी केमिकल हथियार या रासायनिक हथियार माना जा सकता है। केमिकल हथियार इतने घातक होते हैं कि ये पल भर में हजारों लोगों को मौत की नींद सुला सकते हैं और साथ ही उन्हें अलग-अलग बीमारियों के प्रभाव से तिल-तिल कर मरने को मजबूर कर सकते हैं। केमिकल हथियार बायोलॉजिकल हथियार से अलग होते हैं। बायोलॉजिकल हथियार में बैक्टीरिया और वायरस के जरिए लोगों को मारा या बीमार किया जाता है।

जी-20 मुहिम के तहत भारतीय दूतावास ने हेग में साफ किया 240 किलो समुद्री कचरा, 75 तटों को किया साफ

लंदन। भारतीय दूतावास ने नीदरलैंड सरकार के साथ साझेदारी में हेग के प्रसिद्ध शेवेनिंगेन समुद्र तट पर जी-20 बीच का सफाई अभियान चलाया। इसके तहत 5,410 सिगरेट बट्स समेत 240 किलोग्राम समुद्री कचरे की सफाई की गई। दरअसल, समुद्री कचरे की सफाई एवं महासागरों को प्रदूषण मुक्त करना भारत की जी-20 अध्यक्षता का प्रमुख एजेंडा भी है। द हेग में भारत की पहल का उद्देश्य विश्व का ध्यान इस ओर आकर्षित करना है। आयोजन में नीदरलैंड सरकार का प्रतिनिधित्व पर्यावरण महानिदेशक और उप-मंत्री अफके वैन रिजन ने किया। इस कार्यक्रम के जरिये भारत पूरी दुनिया को यह संदेश देना चाहता है कि महासागरों की सफाई से जलवायु परिवर्तन को रोका जा सकता है। इस मौके पर नीदरलैंड में भारत की राजदूत रीनत संधू ने कहा, समुद्री कचरे की सफाई अभियान चलाकर भारत ने अपनी जी-20 अध्यक्षता के मूल वाक्य एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य को लेकर प्रभावशाली संदेश देने का प्रयास किया है। पिछले साल हमने भारत में वृहद स्तर पर समुद्र तट सफाई अभियान चलाया था, उस दौरान 75 दिनों की अवधि में 75 समुद्र तटों को साफ किया गया था।